

11-समस्याएँ आज की समाधान कल के

1. प्रगति से पहले अवगति की रोकथाम

1. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार लोकमानस पर किन दो उन्मादों का प्रभाव है और इनके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं?
2. **उत्तर:** लेखक के अनुसार, लोकमानस पर वैज्ञानिक उपलब्धियों का और प्रत्यक्ष को ही सब कुछ मान बैठने का दोहरा उन्माद चढ़ा है। इस उन्माद में लोग परिणामों को सोचे बिना ऐसे कार्य कर रहे हैं जिनसे जीवन पर निर्भर रहने वाली चीजें नष्ट हो रही हैं। इसके परिणामस्वरूप भविष्य में जीवित रहना भी कठिन हो सकता है और प्रकृति के साथ क्रूर मजाक का प्रतिफल भुगतना पड़ेगा।
3. **प्रश्न:** आधी जनसंख्या को लेखक 'अनुत्पादक' क्यों मानते हैं और इसमें सुधार कैसे हो सकता है?
4. **उत्तर:** लेखक के अनुसार, आधी जनसंख्या (मुख्यतः महिलाएँ) घरेलू कामों में ही अपना जीवन गुजार देती है, जिससे उनका आर्थिक या बौद्धिक उत्पादन पुरुष जितना नहीं दिखता। वे समस्याओं के समाधान या अशिक्षा, गरीबी से निपटने में योगदान नहीं दे पातीं। यदि उनकी क्षमता का समुचित उपयोग किया जाए, तो कौशल, उत्पादन और पुरुषार्थ दोगुना हो सकता है, जिससे देश की प्रगति दोगुनी हो सकती है।
5. **प्रश्न:** अनावश्यक प्रजनन रोकने को लेखक ने महत्वपूर्ण क्यों बताया है?
6. **उत्तर:** लेखक बताते हैं कि दो हजार साल पहले संसार की आबादी लगभग तीस करोड़ थी, जो अब बढ़कर ६०० करोड़ हो गई है, यानी बीस गुनी ज़्यादा। यह गुणन चक्र तेजी से संतुलन बिगाड़ रहा है। यदि कामुकता की दुष्प्रवृत्ति को नियंत्रित कर प्रजनन पर रोक लगाई जा सके, तो अनेक संकटों से छुटकारा मिल सकता है और डूबने वालों को तिनके का सहारा मिल सकता है।
7. **प्रश्न:** लेखक अपव्यय को किस प्रकार की समस्या मानते हैं और इसका समाधान क्या सुझाते हैं?
8. **उत्तर:** लेखक के अनुसार, नशेबाजी, फैशन-परस्ती, आभूषणों की सजधज, खर्चीले विवाह और शेखी-खोरी में अपव्यय चरम सीमा पर है। यह न केवल धन और समय बर्बाद करता है, बल्कि कामुक उत्तेजना और व्यभिचार को भी बढ़ावा देता है। इसका समाधान 'सादा जीवन—उच्च विचार' के सिद्धांत को अपनाना है, जिससे दुखदाई दरिद्रता से आधा छुटकारा मिल सकता है।
9. **प्रश्न:** अमीरी जताने के अहंकार को नियंत्रित करने से क्या लाभ हो सकते हैं?
10. **उत्तर:** यदि अमीरी जताने का अहंकार काबू में रहे, तो व्यक्ति धन-कुबेर बनने की हविस से बच सकता है। औसत नागरिक स्तर का निर्वाह करने से किसी के बड़प्पन में कमी नहीं आती, बल्कि उसे अधिक नीतिवान, प्रसन्न और संयमी उदारचेता कहलाने का अवसर मिलता है। सादगी अपनाने से बचाए गए धन और समय से पिछड़ों का इतना काम चल सकता है कि किसी को भी दयनीय स्थिति में न रहना पड़े।
11. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार, संपत्ति का उपयोग किस प्रकार होना चाहिए?
12. **उत्तर:** लेखक कहते हैं कि संपत्ति का उपयोग वहीं होना चाहिए जहाँ उसकी नितांत आवश्यकता है। कौटुम्बिक उत्तराधिकार का औचित्य केवल असमर्थों के निर्वाह तक सीमित है और व्यावसायिक पूँजी के रूप में मान्यता मिल सकती है। लेकिन पूर्वजों की कमाई को कमाऊ उत्तराधिकारियों पर लादना अनुचित है। यदि ऐसे कुछ सुधार कर लिए जाएँ, तो अधिकांश संकटों का अनायास ही समाधान हो सकता है।

2. शिक्षा ही नहीं, विद्या भी

1. प्रश्न: लेखक वर्तमान स्कूली शिक्षा की सीमाएँ क्या बताते हैं?
 2. उत्तर: लेखक के अनुसार, वर्तमान स्कूली शिक्षा केवल लिखा-पढ़ी और हिसाब-किताब जैसे कामों तक ही सीमित है। इसमें अक्सर ऐसी जानकारीयाँ भी भर दी जाती हैं जो व्यावहारिक जीवन में शायद ही कभी काम आती हैं। प्रमाण-पत्र मिलने के बाद भी, नौकरी न मिलने पर तथाकथित शिक्षित लोग शारीरिक श्रम से कतराते हैं और समाज के लिए एक समस्या बन जाते हैं।
 3. प्रश्न: 'विद्या' को ज्ञान चक्षु और सर्वोपरि धन क्यों कहा गया है?
 4. उत्तर: विद्या को ज्ञान चक्षु की उपमा दी गई है क्योंकि इसके अभाव में मनुष्य अंधों के समान है। इसे सर्वोपरि धन माना गया है क्योंकि यह अमृत की प्राप्ति कराती है। ये विशेषताएँ तब उत्पन्न होती हैं जब विद्या मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव और व्यक्तित्व का विकास करती है, प्रतिभा को उन्नत और सुसंस्कृत बनाती है।
 5. प्रश्न: यदि शिक्षा मानवीय गरिमा के अनुरूप न हो, तो इसके क्या नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं?
 6. उत्तर: यदि शिक्षा मानवीय गरिमा के अनुरूप गुणों का समावेश न कर सके, तो केवल बहुत ज्ञानी होने के नाम पर व्यक्ति उद्धत अहंकार जैसे दुर्गुणों को सँजो सकता है। ऐसे में वह अशिक्षित से भी गया-गुजरा सिद्ध हो सकता है और ऐसे दुःस्वभाव का आदी बन जाएगा जिससे हर प्रकार से अहित ही होगा। भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण से मनुष्य और भी खतरनाक हो जाता है।
 7. प्रश्न: प्राचीनकाल में शिक्षा और विद्या का उद्देश्य क्या था?
 8. उत्तर: प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य निर्वाह के साधन जुटाना और उनका सही प्रयोग करना समझाकर अपना प्रयोजन पूरा करना था। इसके साथ ही, विद्या प्रकृति संपदा और चेतना के क्षेत्र में प्राणियों तथा मनुष्य की रीति-नीति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन उत्पन्न करती थी, जिसे जागरूकता, विचारशीलता या विवेकनिष्ठा कहा जा सकता है।
 9. प्रश्न: आत्म-विस्मृति को लेखक ने 'नरपशु' बनने का कारण क्यों बताया है?
 10. उत्तर: लेखक के अनुसार, आत्म-विस्मृति ऐसा लांछन है जिसके रहते मनुष्य को नरपशु या वनमानुष कहा जा सकता है। मनुष्यता सभ्यता और सुसंस्कारिता से शुरू होती है, जिसका अर्थ है अपने स्तर के गुण, कर्म, स्वभाव के प्रति जागरूकता। इसके अभाव में मनुष्य गिरी हुई स्थिति में रहता है, उसकी प्रगति रुक जाती है और उसकी रीति-नीति उपहासास्पद और तिरस्कृत बनी रहती है।
 11. प्रश्न: लेखक विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए कैसी योजना का आह्वान करते हैं?
 12. उत्तर: लेखक का मानना है कि विद्या की एक सांगोपांग रूपरेखा बनानी पड़ेगी और उसे जन-जन के मन-मन में प्रविष्ट कराने की एक बड़ी और व्यापक योजना बनानी होगी। यह योजना स्कूली शिक्षा की कमी पूरी करने में समर्थ होनी चाहिए। इसके लिए विचारशील और भाव-संपन्न लोगों का समय, श्रम, मनोयोग और पुरुषार्थ सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों की तैयारियों के बराबर नियोजित करना होगा।
-

3. तथ्यों को समझें, दृश्यों में न उलझें

1. प्रश्न: लेखक मनुष्य को 'भटका हुआ देवता' क्यों कहते हैं?
2. उत्तर: लेखक कहते हैं कि भगवान ने चेतना का दूसरा स्तर मनुष्य का ही बनाया है, और उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ-कर्मेन्द्रियाँ इतनी समर्थ हैं कि उसे सृष्टि का सर्व समर्थ प्राणी कहा जाता है। मनुष्य के भीतर दैवी शक्तियाँ निवास करती हैं, लेकिन वह दृश्य जगत् के जाल-जंजाल में स्वयं को भूलकर ठोकरें खाता और भटकता है। इसलिए, उसे 'भटका हुआ देवता' कहा गया है।
3. प्रश्न: मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर क्या गलती करता है?
4. उत्तर: मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर स्वयं को केवल शरीर (कलेवर मात्र) समझता है। वह वाहन को ही अधिपति मान बैठता है और अपनी असीमित क्षमताओं को गोबर भरी मशक में समाया हुआ मानता है। शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करना ज़रूरी है, पर केवल उसी के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देना एक बड़ी भूल है, जो उसे नर से नारायण बनने से रोकती है।
5. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य के काय-कलेवर की शक्ति का वर्णन किस प्रकार किया है?
6. उत्तर: लेखक बताते हैं कि मनुष्य असंख्य परमाणुओं, जीवाणुओं, रसायनों और विद्युत आवेशों का भण्डार है। लगभग साढ़े पाँच फुट ऊँचे ६० किलोग्राम औसत भार के इस शरीर में संभवतः उतने ही गोलक हो सकते हैं जितने समूचे ब्रह्माण्ड में तारे, ग्रह-उपग्रह हैं। इस समूची शक्ति का अनुमान लगाना और आँकलन करना अकल्पनीय है, एक औसत मनुष्य उतना ही विशाल हो सकता है जितना यह समूचा ब्रह्माण्ड प्रकृति संपदा से भरा पड़ा है।
7. प्रश्न: 'स्वर्ग और नरक' को लेखक ने किस रूप में समझाया है?
8. उत्तर: लेखक के अनुसार, स्वर्ग और नरक दोनों ही केवल अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें हर व्यक्ति इच्छानुसार अपने लिए बनाता और बदलता रहता है। संसार जड़ पदार्थों का बना है और उसमें भले-बुरे जैसा कुछ नहीं होता; जड़ पदार्थों का अपना स्वरूप भर है। सुख और दुःख की अनुभूति मनुष्य की खुद की गढ़ी हुई है, और पाप-पुण्य जड़ पदार्थ नहीं करते, बल्कि उनका सदुपयोग या दुरुपयोग पाप-पुण्य की अनुभूति गढ़ते हैं।
9. प्रश्न: उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए लेखक ने सबसे महत्वपूर्ण उपाय क्या बताया है?
10. उत्तर: लेखक के अनुसार, उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए यदि सही उत्तर अपेक्षित हो, तो वह एक ही हो सकता है— "दृष्टिकोण का परिवर्तन"। वे कहते हैं कि बाजी हारना-जीतना खिलाड़ियों की मानसिकता पर निर्भर करता है, गोटियाँ व्यर्थ ही बदनाम होती या सम्मान पाती रहती हैं। समस्याओं का वास्तविक हल मानसिकता के बाजीगर के हाथ में है।

4. इन विभीषिकाओं से कौन जूझेगा? कैसे जूझेगा?

1. प्रश्न: लेखक ने वातावरण में घुल रहे जहर की समस्याओं का उल्लेख किस प्रकार किया है?
2. उत्तर: लेखक बताते हैं कि औद्योगिक कारखाने वायु को विषमय बना रहे हैं, जिससे शुद्ध वायु के अभाव में जीवों को घुटन से दम तोड़ना पड़ सकता है। विषैले रसायन जलाशयों में बहाए जा रहे हैं, जो पीने के पानी में मिलकर धीमे जहर का काम कर रहे हैं। रासायनिक खादें और कीटनाशक आहार में मिलकर स्वास्थ्य को चौपट कर रहे हैं, जिससे वातावरण का तापमान बढ़ रहा है और हिमभंडार पिघल रहे हैं, साथ ही पृथ्वी का सुरक्षा कवच भी फट रहा है।

3. प्रश्न: वनों की कटाई के क्या दुष्परिणाम बताए गए हैं?
4. उत्तर: वनों की बेतहाशा कटाई के कारण धरती रेगिस्तान बनती जा रही है, भूमि की उर्वरता समुद्र में बहकर जा रही है, भयंकर बाढ़ें आ रही हैं और वर्षा का अनुपात घट रहा है। ये सभी प्रकृति के कोप से उत्पन्न होने वाली विभीषिकाएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं, जिससे जीवन का संतुलन बिगड़ रहा है।
5. प्रश्न: प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
6. उत्तर: उद्योगों में कोयला और खनिज तेल जैसे चिरसंचित भूगर्भ वैभव का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिससे उनका अंत निकट आ रहा है। भविष्य में ईंधन के अभाव में कारखाने और द्रुतगामी वाहन कैसे चलेंगे, यह एक बड़ा प्रश्न है। धातुओं की खदानें भी सीमित हैं और जिस तेजी से उनका दोहन हो रहा है, निकट भविष्य में धातुओं की उपलब्धता भी दुर्लभ हो जाएगी।
7. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य, पशु और वृक्षों के परस्पर सम्बन्ध को कैसे समझाया है?
8. उत्तर: लेखक कहते हैं कि पशुओं, वृक्षों और मनुष्यों का निर्वाह परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध से जुड़ा है। यदि इनमें से एक भी घटेगा या मिटेगा, तो शेष दो का भी सफाया हो जाएगा। वृक्षों की पत्तियों और पशुओं-मनुष्यों के मल-मूत्र से धरती की उर्वरता बनी रहती है, जिससे जीवधारियों को आहार मिलता है। पानी और हवा के बिना जीवन स्थिर नहीं रह सकता और आहार की उपज भी नहीं हो सकती।
9. प्रश्न: बढ़ती जनसंख्या को लेखक ने किन समस्याओं का मूल कारण बताया है?
10. उत्तर: लेखक बढ़ती जनसंख्या को अनेक समस्याओं का मुख्य कारण मानते हैं, क्योंकि इसके लिए आहार, जल, मकान, कारखाने, व्यवसाय, विद्यालय, चिकित्सालय जैसे बड़े-चढ़े साधनों की आवश्यकता होती है। जनसंख्या की बेहिसाब वृद्धि के कारण ही वर्तमान प्रवाह ऐसा है जिससे भविष्य अंधकारमय दिखता है। युद्ध भी इसी संदर्भ में एक नया व्यवसाय बन गया है, जो सृजन के बजाय ध्वंस को बढ़ावा दे रहा है।
11. प्रश्न: प्रत्यक्षवाद और स्वार्थपरता का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है?
12. उत्तर: प्रत्यक्षवाद ने आदर्शों पर से आस्थाएँ बुरी तरह डगमगा दी हैं, जिससे केवल स्वार्थ साधन ही प्रमुख दृष्टिकोण रह गया है। मानवीय गरिमा और उत्कृष्टता की चर्चा तो होती है, पर व्यावहारिक प्रचलन मुश्किल से ही दिखता है। छद्म, पाखण्ड और प्रपंच ही धर्म का रूप धारण कर रहा है। इन परिस्थितियों में उज्ज्वल भविष्य की संरचना का उद्देश्य पूरा होना कठिन प्रतीत होता है।

5. कठिन समस्याओं के सरल समाधान

1. प्रश्न: समस्याओं के समाधान के लिए मानवीय चेतना का स्वस्थ होना क्यों आवश्यक है?
2. उत्तर: लेखक के अनुसार, संसार में अगणित प्रकार की सुविधा-संपदाओं का अभिवर्धन तभी संभव है जब मानवीय चेतना स्वस्थ और समुन्नत हो। यदि भूमि और साधनों पर आधिपत्य जमाकर बैठे हुए या योजनाएँ बनाने वाले लोग विकृत मस्तिष्क के होंगे, तो वे कुछ बना नहीं सकेंगे, बल्कि विग्रह और ध्वंस ही खड़ा करेंगे। उलझी हुई समस्याओं का समाधान तो उनसे बन ही नहीं पाएगा।
3. प्रश्न: लेखक व्यक्तिगत स्वस्थता, प्रतिभा और दूरदर्शिता को क्यों महत्व देते हैं?
4. उत्तर: लेखक कहते हैं कि वस्त्राभूषण या धन-संपत्ति जुटाने से कुछ नहीं होता, जब शरीर ही रुग्ण और दुर्बल हो। इसके विपरीत, स्वस्थ, सुडौल शरीर वाला व्यक्ति गरीबी में भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी

लेता है, समस्याओं से निपट लेता है और प्रगति के साधन जुटा लेता है। वस्तुतः महत्व साधनों या परिस्थितियों का नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्वस्थता, प्रतिभा और दूरदर्शिता का है।

5. प्रश्न: 'सादा जीवन—उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाने से समाज को क्या लाभ मिल सकते हैं?

6. उत्तर: 'सादा जीवन—उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाने से असंख्य समस्याएँ खत्म हो जाएँगी। जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी और बहादुरी अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कारिता को जीवन में स्थान देगा, तो समस्याओं का अंधकार मिट जाएगा। संसार में इतने साधन हैं कि हर किसी को रोटी, कपड़ा, मकान और काम मिल सके, जिससे गरीबी-अमीरी, जाति-लिंग की विषमताएँ भी समाप्त हो जाएँगी।

7. प्रश्न: युद्ध प्रयोजनों में लगने वाली शक्ति और प्रतिभा का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है?

8. उत्तर: युद्ध प्रयोजनों में जो संपदा, शक्ति और प्रतिभा का नियोजन हो रहा है, उसे बचाया जा सके और नवसृजन के प्रयोजनों में लगाया जा सके, तो इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की सभी कल्पनाएँ दस वर्ष के भीतर साकार हो जाएँगी। मनुष्य स्नेह और सहयोगपूर्वक रहने के लिए पैदा हुआ है, लड़ने के लिए नहीं, इसलिए आपाधापी न होने पर एकता और समता में बाधा नहीं आएगी।

9. प्रश्न: परमाणु ईंधन के अत्यधिक उत्पादन के विकल्प में लेखक क्या सुझाव देते हैं?

10. उत्तर: परमाणु ईंधन के अत्यधिक उत्पादन से आणविक राख और विकिरण का खतरा बढ़ जाएगा। इसका विकल्प लेखक यह बताते हैं कि स्थानीय साधनों से छोटे बिजली घर या जनरेटर स्तर के संयंत्र बनाए जाएँ। उनके उत्पादन से एक-दो हार्स पावर से चलने वाले छोटे कुटीर उद्योग लगाकर आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए और हर उपभोक्ता को इसी प्रकार के उत्पादन का उपयोग करने के लिए सहमत किया जाए।

11. प्रश्न: लेखक शासन व्यवस्था में किस प्रकार के परिवर्तन की बात करते हैं?

12. उत्तर: लेखक कहते हैं कि वर्तमान शासन तंत्र खर्चीली और कर्तव्य विमुख नौकरशाही पर आधारित है, जहाँ कर्मचारी मालिकों के भी मालिक बन गए हैं, जिससे जन कल्याण की आशा क्षीण हो गई है। होना यह चाहिए कि सहकारिता के आधार पर विकेन्द्रीकृत शासन और सेवा भावना के आधार पर पूरी व्यवस्था का संचालन हो। ऐसा शासन ही आदर्श हो सकता है और भौतिक तथा आत्मिक प्रगति का समग्र प्रयोजन पूरा कर सकता है।

6. नवसृजन की चेतना असमर्थ नहीं है

1. प्रश्न: व्यापक विपत्तियों से निपटने के लिए लेखक क्या सुझाव देते हैं?

2. उत्तर: लेखक बताते हैं कि व्यक्तिगत समस्याओं को तो सामान्यजन स्वयं सँभालते रहते हैं, लेकिन व्यापक विपत्तियों जैसे बाढ़ या महामारी से मिलजुल कर ही निपटना पड़ता है। ऐसे अवसरों पर सामूहिक योजनाएँ ही काम आती हैं। जिस प्रकार भगीरथ ने गंगा को लाकर विशाल क्षेत्र का समाधान किया था, उसी प्रकार बड़े पैमाने पर व्यापक तैयारियाँ करनी होती हैं।

3. प्रश्न: समस्याओं का मूल कारण क्या है और उनका वास्तविक समाधान कहाँ छिपा है?

4. उत्तर: लेखक के अनुसार, समस्याओं का मूल कारण मनुष्य का चिन्तन, चरित्र और व्यवहार का बुरी तरह गड़बड़ा जाना है, जिसकी स्थिति विक्षिप्तों जैसी हो गई है। इससे ऊटपटाँग काम होते हैं और

विपत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। वास्तविक समाधान केवल लक्षणों पर मरहम-पट्टी करना नहीं, बल्कि इस उन्माद की रोकथाम करना और जड़ तक खाद-पानी पहुँचाना है, यानी दृष्टिकोण का परिवर्तन।

5. प्रश्न: लेखक 'महाक्रान्ति' या 'युग परिवर्तन' से क्या आशय रखते हैं?

6. उत्तर: लेखक 'महाक्रान्ति' या 'युग परिवर्तन' से तात्पर्य एक ऐसे तूफानी परिवर्तन से रखते हैं जिसमें दूरगामी योजनाएँ बनाई जाती हैं। यह केवल अनीति के विरुद्ध संघर्ष छोड़ने तक सीमित नहीं, बल्कि नवसृजन के निर्धारण और कदम उठाने के बारे में भी है। यह एक अदृश्य में पक रही खिचड़ी है जो इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना का आधार बनेगी।

7. प्रश्न: लेखक ने यह विश्वास क्यों जताया है कि सृष्टि का विनाश नहीं होगा?

8. उत्तर: लेखक का मानना है कि स्रष्टा की सत्ता और क्षमता पर विश्वास रखने वालों को यह सोचना चाहिए कि गंदगी कितनी भी कुरुचिपूर्ण क्यों न हो, वह तूफानी अंधड़ और मूसलाधार वर्षा के सामने टिक नहीं सकेगी। भले ही मनुष्य ने बिगाड़ रचने में अपनी क्षुद्रता का परिचय दिया हो, पर इस सुंदर भूलोक का संस्थापक उसे इस प्रकार वीरान नहीं होने देगा। विश्व को संरक्षण देने वाली देव सत्ताएँ निष्क्रिय नहीं हैं।

9. प्रश्न: मृत्यु की चुनौती के बावजूद आशावादी रहने का क्या कारण है?

10. उत्तर: लेखक बताते हैं कि मृत्यु की विभीषिका हर क्षण असंख्य लोगों को निष्प्राण करती रहती है, फिर भी सृजन का देवता सदा से उसकी चुनौती स्वीकार करता रहा है। मरने वालों की तुलना में जन्मने वाले सदा अधिक रहे हैं, अन्यथा जीवधारियों की वृद्धि रुक गई होती। यह तथ्य बताता है कि निराशाजनक वातावरण कितना भी हो, विचारशीलों को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए क्योंकि मनुष्यता आश्चर्यजनक करवटें लेती रही है, जिससे नए देव मानवों का उदय होता है।

7. देवमानवों का अवतरण

1. प्रश्न: लेखक ने 'नरक को स्वर्ग में उलट देने' की प्रक्रिया को कैसे संभव बताया है?

2. उत्तर: लेखक बताते हैं कि विशाल पर्वत जैसे टीलों और गहरे खन्दकों को समतल बना देना भले ही आश्चर्यजनक लगे, पर आस्थावानों को विश्वास करने का कारण है। जिस प्रकार गहरी रात के बाद उषाकाल और अरुणोदय होता है, या बाल की नोंक से भी छोटा शुक्राणु पराक्रमी प्रौढ़ बनता है, वैसे ही असम्भव भी सम्भव होता है। युग बदलते रहे हैं, और सतयुग फिर से अपना कारोबार संभाल सकता है।

3. प्रश्न: 'युग परिवर्तन' को किसी व्यक्ति विशेष की योजना क्यों नहीं माना गया है?

4. उत्तर: लेखक कहते हैं कि वर्तमान युग परिवर्तन किसी व्यक्ति विशेष की योजना नहीं है। इसके पीछे महाकाल का दुर्धर्ष संकल्प काम कर रहा है और प्रकृति ने नई संरचना के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना शुरू कर दिया है। यह एक दैवी प्रवाह है जो नवसृजन के देवता की झोली में समयदान, अंशदान और साहस जुटाने के लिए प्रेरित करता है।

5. प्रश्न: देव-समुदाय या देवमानव किस प्रकार का पुरुषार्थ करेंगे?

6. उत्तर: लेखक के अनुसार, एक प्रचंड शक्तिशाली जाज्वल्यमान तारक प्रकट हो रहा है, जिसकी लपटें संसार भर के जीवन्त मनुष्यों को झकझोर कर कार्यक्षेत्र में उतारेंगी। यह देव-समुदाय देखने में भले ही रीछ-वानरों जैसा हो, पर पुरुषार्थ ऐसा करेगा जिसे असम्भव को सम्भव बनाने जैसा माना जा सके। वे

अपनी संयुक्त शक्ति को संगठित करेंगे और जिन मनुष्यों में जीवट पाया जाएगा, उनमें देवत्व का उदय किए बिना चैन से नहीं बैठेंगे।

7. प्रश्न: महाकाल की अग्नि शिखा का क्या प्रभाव होगा?

8. उत्तर: महाकाल की यह अदृश्य अग्नि शिखा चर्मचक्षुओं से नहीं देखी जा सकती, पर यह हर जीवंत व्यक्ति से समय की पुकार के रूप में कुछ महत्वपूर्ण पुरुषार्थ करवाए बिना छोड़ने वाली नहीं है। ऐसे लोगों का समुदाय जब मिलकर अवाँछनीयताओं के विरुद्ध निर्णायक युद्ध छेड़ेगा और नई दुनिया बनाएगा, तो पतन के गर्त में तेजी से गिरने वाला वातावरण ऊपर उठकर अपनी नियत कक्षा में द्रुतगति से परिभ्रमण करने लगेगा।

9. प्रश्न: युग का अवतार कौन से दो संदेश सुनाएगा और उसका परिणाम क्या होगा?

10. उत्तर: अपने युग का अवतार हर किसी को दो संदेश सुनाएगा: एक आत्मपरिष्कार और दूसरा सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन। ध्वंस और सृजन की यह दोहरी प्रक्रिया तेजी से चलेगी, जो निरर्थक टीलों को गिराकर और भयानक खड्डों को पाटकर सब कुछ समतल कर देगी, जिस पर असंख्य उद्यान लगाए जा सकेंगे। इसका अंतिम परिणाम विचार परिवर्तन, करुणा, संयम और आदर्शवादी पराक्रम होगा, जिससे धरती पर स्वर्ग उतर आएगा।

8. विद्या बनाम शिक्षा

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार वर्तमान में समाज के सामने कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ हैं?

2. उत्तर: लेखक बताते हैं कि व्यक्ति, समाज और संसार के सामने अगणित समस्याएँ मुँह बाए खड़ी हैं, जो सर्वग्राही चुनौती बन रही हैं। इनमें अपराधों का बढ़ना, जनसंख्या का तीव्र विस्तार, शारीरिक और मानसिक रोगों का अंधड़, हर जगह प्रदूषण, दरिद्रता, निरक्षरता, राजनीतिक अराजकता और धार्मिक क्षेत्र में कर्तव्यों की उपेक्षा प्रमुख हैं। इन समस्याओं का निराकरण कठिन प्रतीत होता है।

3. प्रश्न: मानवीय चेतना के विभ्रम और व्यामोह-ग्रस्त होने से क्या परिणाम हुए हैं?

4. उत्तर: लेखक कहते हैं कि मानवीय चेतना के विभ्रम और व्यामोह-ग्रस्त हो जाने से सब कुछ उलट-पुलट हो गया है। लोग मानवीय गरिमा को भुला रहे हैं, संकीर्ण स्वार्थपरता बढ़ गई है, और तात्कालिक लाभ को इतना महत्व दिया जा रहा है कि दूरदर्शी विवेकशीलता के पैर नहीं टिक पाते। पूर्वाग्रह इतने हठी हो गए हैं कि स्वतंत्र चिंतन की गुंजाइश नहीं बची।

5. प्रश्न: भविष्य में समस्याओं के समाधान के लिए किस प्रकार की प्रतिभा की आवश्यकता होगी?

6. उत्तर: लेखक के अनुसार, अगले दिनों इसी स्तर की प्रखर प्रतिभा घनघोर रूप से बरसने वाली है, जिसके प्रभाव से सभी प्रभावित होंगे और सही समाधान सोचने तथा सही कदम उठाने लगेंगे। जब व्यक्तित्वों में देवत्व का अनुपात बढ़ेगा, तो अपनी इसी धरती पर स्वर्गोपम-वातावरण और सतयुगी सुख-शांति का अभिनव सृजन होता दिखाई पड़ेगा। यह मानसिकता के संतुलन से विनाश को विकास में बदलने की क्षमता लाएगा।

7. प्रश्न: 'विद्या' और 'शिक्षा' की तुलना एक दन्त कथा के माध्यम से कैसे की गई है?

8. उत्तर: एक दन्त कथा में विद्या को राजकुमारी और शिक्षा को नौकरानी बताया गया है, जिनकी शक्ल-सूरत मिलती-जुलती थी। शिक्षा ने चालाकी से राजकुमारी के कपड़े पहनकर उसका स्थान ले लिया और विद्या को जंगल में भटकने के लिए मजबूर कर दिया। यह कथा दर्शाती है कि लोगों ने 'संजीवनी

विद्या' के महत्व को भुलाकर उसे उपेक्षित कर दिया है, जबकि शिक्षा (जो पैसा कमाने पर केंद्रित है) ने उसका स्थान ले लिया है।

9. प्रश्न: 'विद्या' का वास्तविक उद्देश्य क्या है, और इसके अभाव में संसार की क्या स्थिति हो गई है?

10. उत्तर: विद्या का उद्देश्य व्यक्तित्व को उभारना, प्रतिभा को जगाना, दृष्टिकोण को उत्कृष्टता से जोड़ना और अंतःकरण को आत्मीयता एवं उदारता से भरना है। इसे अमृतवर्षिणी और अन्नपूर्णा कहा गया है। लोगों द्वारा विद्या के महत्व को भुलाने और उसे अनावश्यक ठहराने के कारण ही यह सुंदर संसार बुरी तरह दीन-हीन और अपराधी प्रवृत्ति का बन गया है, जिसका परिणाम विश्व विनाश के रूप में सामने है।

11. प्रश्न: नवयुग की स्थापना किन दो आधारों पर होगी?

12. उत्तर: लेखक बताते हैं कि विद्या और प्रज्ञा का युग तूफानी गति से बढ़ रहा है, जिसका लक्ष्य हर मस्तिष्क में नई हलचल उत्पन्न करना है। यह पुरानी मान्यताओं और धारणाओं को उखाड़ फेंकेगा और दूरदर्शी विवेकशीलता की वर्षा करेगा, जिसके प्रभाव से औचित्य का ही सर्वत्र स्वागत किया जाएगा। विवेक और औचित्य के दो आधार ही नवयुग की स्थापना करेंगे, जिन्हें समय की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया जाएगा।